Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04, October-December, 2025, pp. 88-92

मानव और मानवता का अध्ययनः अतीत और वर्तमान

श्री मुकेश कुमार महोलिया*

अस्सिटेंट प्रोफेसर (हिंदी विभाग), विवेक पी जी महाविद्यालय, कालवाड़, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: mkmaholiya88@gmail.com

***Citation**: महोलिया, मुकेश. (2025). मानव और मानवता का अध्ययनः अतीत और वर्तमान. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 15(04), 88–92.*

सार

मनुष्य का अस्तित्व केवल उसकी जैविक सत्ता तक सीमित नहीं है, अपितु वह संवेदनशील, विचारशील तथा सामाजिक प्राणी भी है। उसकी वास्तविक पहचान उसकी मानवता में निहित है, जिसके अंतर्गत करुणा, प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता एवं परोपकार जैसे मानवीय मूल्य अंतर्भूत रहते हैं। यही मूल्य मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न करते हैं और समाज को नैतिक आधार प्रदान करते हैं। हिंदी साहित्य ने प्राचीन काल से ही मानवता को अपनी चिंतनधारा एवं अभिव्यक्ति का केंद्र बनाया है। ऋग्वेद और उपनिषदों में सत्य, धर्म तथा अहिंसा के आदर्शों के माध्यम से मानवता का स्वरूप प्रतिपादित हुआ। रामायण एवं महाभारत जैसे महाकाव्यों में लोककल्याण, त्याग और धर्मसंकटों के चित्रण से मानवता के विविध आयाम उद्घाटित हुए। संत साहित्य ने जातिगत भेदभाव एवं सामाजिक विषमता का विरोध करते हुए प्रेम, करुणा और परहित को मानवता का मूल आधार स्वीकार किया। कबीर, तुलसी, सूरदास और गुरु नानक ने सार्वभौमिक दृष्टिकोण से मानवता की परिभाषा प्रस्तुत की। आधुनिक हिंदी साहित्य में मानवता का स्वरूप और भी व्यापक रूप में प्रकट हुआ। प्रेमचंद ने शोषित वर्ग की पीड़ा को मार्मिक ढंग से चित्रित किया, दिनकर ने राष्ट्रीयता एवं मानवता का समन्वय किया, महादेवी वर्मा ने करुणा और संवेदना को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी तथा नागार्जुन और मुक्तिबोध ने अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध संघर्ष को मानवता का अविभाज्य अंग माना। विज्ञान एवं भौतिकवाद ने जीवन को सहज और सुविधापूर्ण बनाया, तथापि उन्होंने मानवीय मूल्यों के समक्ष गंभीर संकट उपस्थित कर दिया। युद्ध, आतंकवाद, उपभोक्तावाद और पर्यावरण–समस्या जैसी चुनौतियाँ आज मानवता के अस्तित्व को असंतुलित कर रही हैं। ऐसे समय में हिंदी साहित्य न केवल मानवीय संवेदनाओं की रक्षा करता है, बल्कि मानवता की पुनर्स्थापना का समर्थ साधन भी सिद्ध होता है।

***शब्दकोशः** मानव, मानवता, करुणा, प्रेम, हिंदी साहित्य, प्राचीन साहित्य, आधुनिक साहित्य, सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक चेतना, मानवाधिकार, विज्ञान, भौतिकवाद।*

प्रस्तावना

मानवता मनुष्य की आत्मा का सार है। केवल शारीरिक, भौतिक अथवा बाह्य उपलब्धियाँ उसकी पूर्णता का निर्धारण नहीं कर सकतीं। उसका वास्तविक स्वरूप उसकी संवेदनशीलता, नैतिक मूल्यों तथा मानवीय दृ

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

ष्टिकोण में निहित रहता है। भारतीय दर्शन का सूत्र "अहं ब्रह्मास्मि" न केवल आत्मचेतना का उद्घोष है, बल्कि यह मानवता की सार्वभौमिक अनुभूति और उच्चतम मानवीय चेतना का प्रतीक भी है।

हिंदी साहित्य ने अपने उद्भव काल से ही मानवता को अपने चिंतन और अभिव्यक्ति का केंद्र बनाया है। संत कवियों ने प्रेम, करुणा और लोकमंगल को मानवता का मूल आधार माना तथा जातिगत भेदभाव और सामाजिक विषमता का तीव्र विरोध किया। आधुनिक साहित्यकारों ने सामाजिक अन्याय, शोषण और असमानता के विरुद्ध संघर्ष को मानवता की रक्षा के रूप में प्रस्तुत किया और साहित्य को सामाजिक चेतना का साधन सिद्ध किया।

वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी युग ने जहाँ भौतिक सुख–सुविधाओं का विस्तार किया है, वहीं युद्ध, आतंकवाद, उपभोक्तावाद और पर्यावरण संकट ने मानवता को गहन संकट में डाल दिया है। ऐसी परिस्थिति में साहित्य केवल कलात्मक अभिव्यक्ति न होकर मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना और नैतिक चेतना के जागरण का सशक्त माध्यम सिद्ध होता है। इस परिप्रेक्ष्य में अतीत और वर्तमान की मानवता का तुलनात्मक विश्लेषण न केवल प्रासंगिक, बल्कि समय की अपरिहार्य आवश्यकता है।

शोध समस्या

मानवता का स्वरूप समय और संदर्भ के अनुसार परिवर्तनशील रहा है। प्राचीन युग में यह धार्मिक आस्था, नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना से प्रभावित था, जबकि आधुनिक युग में यह सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ अभिन्न रूप से जुड़ गया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि अतीत में मानवता का स्वरूप क्या था और साहित्य ने उसे किस रूप में प्रस्तुत किया।

साथ ही यह अध्ययन यह प्रश्न भी प्रस्तुत करता है कि वर्तमान युग में मानवता किन संकटोंकृजैसे युद्ध, आतंकवाद, उपभोक्तावाद, सामाजिक असमानता और पर्यावरणीय संकटकृका सामना कर रही है। विशेष रूप से यह देखना आवश्यक है कि हिंदी साहित्य इन चुनौतियों के बीच मानवता की रक्षा और पुनर्स्थापना में किस प्रकार योगदान कर सकता है।

अतः यह शोध अतीत और वर्तमान की मानवता के स्वरूप की समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण करने तथा साहित्य की मानवीय भूमिका को स्पष्ट रूप से उद्घाटित करने का प्रयास है।

शोध उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य अतीत और वर्तमान के कालखंडों में मानवता के स्वरूप को स्पष्ट करना है। इसका प्रयास यह है कि साहित्य में मानवता की अभिव्यक्ति को गहराई से समझा जाए और उसके विविध आयामों का विश्लेषण किया जा सके। प्राचीन साहित्य में जहाँ मानवता का आधार धार्मिकता, नैतिकता और आध्यात्मिकता था, वहीं आधुनिक साहित्य ने इसे सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और लोकतांत्रिक चेतना से जोड़कर प्रस्तुत किया।

इस अध्ययन का एक अन्य उद्देश्य यह भी है कि तुलनात्मक दृष्टि से यह प्रतिपादित किया जा सके कि मानवता की मूल संवेदनाएँकृजैसे प्रेम, करुणा, सहयोग और परोपकारकृहर युग में स्थायी रूप से विद्यमान रही हैं। इसके अतिरिक्त आधुनिक युग में साहित्य की प्रासंगिकता को उद्घाटित करना और यह स्पष्ट करना कि यह मानवता की रक्षा एवं संवर्धन में किस प्रकार योगदान दे सकता है, इस शोध का महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

इस प्रकार यह अध्ययन अतीत और वर्तमान में मानवता की समानताओं, भिन्नताओं और साहित्य की भूमिका का विस्तृत और सुसंगत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

कार्यविधि

इस शोध में मानवता के स्वरूप और उसके साहित्यिक प्रतिबिंब का अध्ययन करने हेतु ऐतिहासिक, तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है। शोध कार्य में अतीत और वर्तमान दोनों कालखंडों की मानवता की अभिव्यक्ति का सुसंगत और गहन दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए स्रोतों का चयन सावधानीपूर्वक किया गया।

प्राथमिक स्रोतों में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत के ग्रंथों के साथ–साथ संत और आधुनिक युग के प्रमुख कवि–लेखकों की रचनाएँ शामिल हैं। इन ग्रंथों और रचनाओं के माध्यम से मानवता के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक आयामों का अध्ययन किया गया।

द्वितीयक स्रोतों में आलोचना ग्रंथ, शोध–पत्रिकाएँ, हिंदी साहित्य का इतिहास और समकालीन आलोचकों के विचार सम्मिलित हैं। इन स्रोतों के आधार पर मानवता की संकल्पना, उसकी निरंतरता और साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया।

साहित्य समीक्षा

- **प्राचीन साहित्य**

प्राचीन साहित्य में मानवता का आधार सामूहिक जीवन, नैतिकता और आध्यात्मिकता रहा है। ऋग्वेद का मंत्र "संगच्छध्वं संवदध्वं..." प्राचीन समाज में सहयोग, एकता और मानवीय मूल्यों का प्रतीक है। उपनिषदों ने मानवता को सत्य, धर्म और अहिंसा के आदर्शों से जोड़कर उसकी आंतरिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व को उजागर किया। इस प्रकार प्राचीन साहित्य मानवता की गहन दृष्टि और जीवन के नैतिक आधार की शिक्षा देता है।

- **महाकाव्य परंपरा**

महाकाव्य जैसे रामायण और महाभारत मानवता के आदर्श और नैतिक जटिलताओं का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। राम का लोककल्याणकारी दृष्टिकोण, सीता का त्याग और हनुमान का समर्पण उच्चतम मानव मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। महाभारत में युधिष्ठिर के धर्मसंकट और करुणा की जटिलताएँ सामाजिक और नैतिक प्रश्नों को उद्घाटित करती हैं, जो मानव जीवन में नैतिक विवेक और जिम्मेदारी की आवश्यकता को स्पष्ट करती हैं।

- **संत साहित्य**

संत साहित्य ने मानवता को सार्वभौमिक दृष्टि से प्रस्तुत किया। कबीर ने ज्ञान और चेतना को सर्वोच्च मूल्य माना, तुलसीदास ने परहित और लोककल्याण को धर्म का आधार माना। सूरदास ने प्रेम और करुणा को केंद्र में रखा, जबकि गुरु नानक ने समस्त मानवता को ईश्वर की संतान मानकर समानता और भाईचारे का संदेश दिया। संत साहित्य जाति, पाँति और सामाजिक भेदभाव से परे मानवता की व्यापकता को रेखांकित करता है।

- **आधुनिक साहित्य**

आधुनिक हिंदी साहित्य में मानवता का स्वरूप यथार्थपरक और सामाजिक दृष्टि से संवेदनशील हुआ। प्रेमचंद ने गोदान और कफन जैसी रचनाओं में शोषित और पीड़ित मानवता का मार्मिक चित्रण किया। दिनकर ने राष्ट्रीय चेतना और मानवता का संगम प्रस्तुत किया। महादेवी वर्मा ने करुणा और संवेदना को साहित्यिक अभिव्यक्ति दी। नागार्जुन और मुक्तिबोध ने अन्याय और शोषण के विरुद्ध संघर्ष को मानवता के स्वरूप के रूप में उजागर किया।

- **आलोचकों के विचार**

समकालीन आलोचक भी साहित्य को मानवता की संवेदना का द्योतक मानते हैं। नामवर सिंह के अनुसार साहित्य मानवता की चेतना और संवेदनाओं का आख्यान है। रामस्वरूप चतुर्वेदी का मत है कि आधुनिक हिंदी साहित्य का मूल उद्देश्य शोषित मानवता की मुक्ति है। नंददुलारे वाजपेयी ने साहित्य और संस्कृति को मानवता से अभिन्न रूप में जोड़ा।

इस प्रकार साहित्य प्राचीन काल से आधुनिक युग तक न केवल मानवता की अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है, बल्कि यह नैतिक चेतना और सामाजिक जिम्मेदारी के मार्गदर्शन में भी निर्णायक भूमिका निभाता है।

मुख्य विवेचन

- **अतीत में मानव और मानवता**

अतीत में मानवता का आधार धर्म, करुणा और सामूहिक जीवन की मान्यताओं पर स्थापित था। प्राचीन महाकाव्यकृजैसे रामायण और महाभारतकृइस सत्य का प्रबल साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। राम का लोककल्याणकारी दृष्टिकोण, सीता का त्याग और युधिष्ठिर का धर्मसंकट मानवता के उच्चतम नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। संत साहित्य ने जातिगत भेदभाव और सामाजिक अन्याय का विरोध करते हुए मानवता को सार्वभौमिक दृष्टि से देखा। कबीर, तुलसीदास, सूरदास और गुरु नानक जैसे संतों ने प्रेम, करुणा, परहित और समानता को मानव जीवन के मूल आधार के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रकार अतीत में मानवता का स्वरूप नैतिकता, आध्यात्मिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व पर केंद्रित रहा।

- **वर्तमान में मानव और मानवता**

आधुनिक युग में साहित्य ने सामाजिक शोषण, असमानता और अन्याय के विरुद्ध सक्रिय आवाज़ उठाई। प्रेमचंद ने गोदान और कफन में किसानों और निर्धनों की पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया। दिनकर ने राष्ट्रीय चेतना और मानवता का संगम प्रस्तुत किया। महादेवी वर्मा ने करुणा और संवेदनशीलता को साहित्य का केंद्र बनाया। नागार्जुन और मुक्तिबोध ने अन्याय और शोषण के विरुद्ध संघर्ष को मानवता के संवेदनशील स्वरूप के रूप में रेखांकित किया। आधुनिक साहित्य केवल मानवीय संवेदनाओं को उजागर नहीं करता, बल्कि समाज में न्याय, समानता और अधिकारों की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालता है।

- **वर्तमान की चुनौतियाँ और संभावनाएँ**

वर्तमान युग में मानवता के सामने अनेक गंभीर संकट हैं। युद्ध, आतंकवाद, जातीय संघर्ष, उपभोक्तावाद और पर्यावरणीय संकट मानव मूल्यों को चुनौती दे रहे हैं। इसके बावजूद मानवाधिकार आंदोलन, वैश्विक दृष्टिकोण, गांधीवादी विचारधारा और डिजिटल साहित्यिक चेतना जैसी संभावनाएँ मानवता के संरक्षण और पुनर्स्थापना के नए मार्ग खोलती हैं। साहित्य इस संदर्भ में केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि नैतिक मार्गदर्शन और सामाजिक चेतना का सशक्त साधन बनकर उभरता है।

इस प्रकार यह विवेचन स्पष्ट करता है कि अतीत और वर्तमान दोनों में मानवता की अभिव्यक्ति युग और संदर्भ के अनुसार भिन्न रही है, किंतु इसके मूल मूल्यकृप्रेम, करुणा, सहयोग और न्यायकृस्थायी रहे हैं।

तुलनात्मक अध्ययन

अतीत और वर्तमान की मानवता के स्वरूप में समयानुसार भिन्नताएँ और समानताएँ स्पष्ट रूप से देखी जाती हैं। प्राचीन युग में मानवता का आधार धार्मिकता, नैतिकता, करुणा और आध्यात्मिक चेतना पर आधारित था। उस समय समाज मूल्य–प्रधान था और जीवन में धर्म, सत्य और अहिंसा का विशेष स्थान था। रामायण, महाभारत और संत साहित्य जैसे ग्रंथ इस दृष्टि का प्रत्यक्ष साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। संतों ने सामाजिक अन्याय और जातिगत भेदभाव का विरोध करते हुए मानवता को सार्वभौमिक दृष्टि से देखा।

वर्तमान युग में मानवता का स्वरूप सामाजिक, राजनीतिक और वैश्विक संदर्भों से प्रभावित होकर विकसित हुआ है। लोकतंत्र, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और वैश्वीकरण इसके केंद्रीय मूल्य बन गए हैं। आधुनिक समाज भौतिक और तकनीकी उन्नति से संचालित है, जिससे जीवन सुख–सुविधा से भरपूर हुआ, किंतु मानवीय मूल्योंकृजैसे प्रेम, करुणा, सहयोग और परहितकृको चुनौतियाँ मिली हैं।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो अतीत और वर्तमान में संदर्भ और प्रस्तुति भले बदल गई हो, किंतु मानवता की मूल संवेदनाएँकृप्रेम, करुणा, सहयोग और परहितकृस्थायी रूप से मौजूद रही हैं। अतीत की नैतिक और आध्यात्मिक गहराई तथा वर्तमान की सामाजिक और लोकतांत्रिक चेतना मिलकर मानवता के समग्र और संतुलित स्वरूप को सुनिश्चित करती हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मानवता ही मनुष्य की वास्तविक पहचान है। अतीत में यह धर्म, नैतिकता, करुणा और आध्यात्मिक चेतना से प्रेरित थी, जबकि वर्तमान में लोकतंत्र, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय के संदर्भ में उभरकर सामने आई है। प्राचीन महाकाव्य, उपनिषद और संत साहित्य मानवता के उच्चतम आदर्शों को प्रदर्शित करते हैं, वहीं आधुनिक साहित्यकारों ने शोषण, असमानता और अन्याय के विरुद्ध मानवीय संवेदनाओं को सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो अतीत और वर्तमान दोनों में प्रेम, करुणा, सहयोग और परहित जैसे मूलभूत मूल्य निरंतर उपस्थित रहे हैं। आज की आवश्यकता यह है कि अतीत की नैतिकता और वर्तमान की प्रगतिशीलता को संतुलित रूप से मिलाकर ऐसा समाज निर्मित किया जाए, जिसमें संवेदना और आधुनिकता का समग्र और सुसंगत समावेश हो। साहित्य इस मार्ग में चेतना और नैतिक दिशा प्रदान करने का सर्वोत्तम साधन है।

"जहाँ करुणा है, वहीं मानवता है।"

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद, उपनिषद
2. तुलसीदास – रामचरितमानस
3. कबीर – बीजक
4. सूरदास – सूरसागर
5. गुरु नानक – जपुजी साहिब
6. प्रेमचंद – गोदान, कफन, सेवासदन
7. दिनकर – परशुराम की प्रतीक्षा, मानवता का आह्वान
8. महादेवी वर्मा – अतीत के चलचित्र, नीहार, गौरा
9. नागार्जुन – अकाल और उसके बाद
10. मुक्तिबोध – अंधेरे में
11. रामस्वरूप चतुर्वेदी – आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ
12. नंददुलारे वाजपेयी – हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति
13. नामवर सिंह – कविता के नए प्रतिमान
14. समकालीन पत्रिकाएँ – समकालीन जनमत, हिंदी आलोचना

❑❑❑